14

याबेश के निवासी

कृतज्ञता का चित्रण

(31:11-13)

इलिनोयस का एक किसान नैशविल्ले, टेनिसी में एक सैनिक की कब्र के आगे घुटने टेके बैठा हुआ था। जब उससे पूछा गया कि ज़्या वह कब्र उसके लड़के की है, तो उसने उज़र दिया, ''नहीं। वह हमारे गांव में रहता था। मैं उसकी कब्र ढूंढ़ने आया हूं।'' पूछने वाले ने कहा, ''आपको उसके पिता ने भेजा होगा जो खुद नहीं आ सका?'' उसने कहा, ''हां, इसके पिता को मुझे भेजकर खुशी होती, परन्तु मैं तो अपने आप आया हूं। मेरे सात बच्चे हैं, सब छोटे छोटे हैं, और मेरी पत्नी बीमार है। मुझे तैयार किया गया था। खेत में मेरा काम करने वाला कोई नहीं था, और मैं अपनी जगह किसी को भेज नहीं सकता था। तेरह डॉलर की मेरी कमाई से घर का गुज़ारा नहीं चलता था। मुझे लगा कि मुझे जाना चाहिए और मेरे परिवार के लोगों को कष्ट उठाना होगा। छावनी में जाकर नाम लिखाने के एक दिन पहले, मेरे पड़ोसी का लड़का आकर मुझ से कहने लगा कि मुझे भेज दो। उसने कहा, कि उसके पीछे उस पर आश्रित कोई नहीं है और उसका जाना उचित होगा। वह चला गया और शिकामाउगा में घायल हो गया। उसे नैशविल्ले के अस्पताल में लाया गया जहां उसकी मृत्यु हो गई। मैंने उसकी कब्र ढूंढ़ ली है।'' फिर उसके सामने कब्र के पत्थर पर लिख दिया, ''मेरे लिए मरा।''

कृतज्ञता परमेश्वर को मानने वालों की पज़्की निशानी है। नये नियम में मसीही लोगों को एक बार नहीं बल्कि कई बार कृतज्ञ होने की आज्ञा दी गई है:

> ... जिसके लिए तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, ... और तुम धन्यवादी बने रहो (कुलस्सियों 3:15ख)।
>
> हर बात में धन्यवाद करो: ज़्योंकि तुज़्हारे लिए मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है (1 थिस्सलुनीकियों 5:18)।
>
> अब मैं सब से पहिले यह उपदेश देता हूं, कि बिनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिए किए जाएं (1 तीमुथियुस 2:1)।

दुख की बात है कि इन स्पष्ट आज्ञाओं के बावजूद, धन्यवादी मनों की कमी है!

धन्यवाद करना हमेशा जोशपूर्ण होता है। ''धन्यवाद'' वाला व्यवहार इसे देखने वाले सब लोगों को आनन्दित करता है। याबेश-गिलाद के लोग इस व्यवहार को दिखाते हैं और उनकी कृतज्ञता के साथ 1 शमूएल की पुस्तक समाप्त होती है।

याबेश यरदन नदी के पश्चिम में स्थित एक छोटा सा नगर था। केवल यही इस्राएली नगर था जिसने बिन्यामीन के गोत्र के विरुद्ध युद्ध में भाग नहीं लिया था (न्यायियों 20:13)।। गोत्र को तहस नहस कर देने के बाद, याबेश की पत्नियां ही बिन्यामीन के पुरुषों के लिए बची थीं (न्यायियों 21:8-15)। इस कारण दोनों में एक लज़्बा और गहरा सज़्बन्ध बन गया था। यह सज़्भव है कि शाऊल के कुछ पूर्वज इसी नगर के थे।

गृहयुद्ध तथा अन्तरविवाह के इस समय के लगभग तीन सौ से अधिक साल बाद, बिन्यामीन की राजधानी गिबा में एक शिष्टमण्डल आया। यह शिष्टमण्डल अज़्मोनी नाहाश की धमकियों से बचने के लिए सहायता मांग रहा था। यदि याबेश आत्मसमर्पण कर दे तो नाहाश ने हर पुरुष की दाईं आंख निकाल देनी थी। जिससे सभी पुरुष युद्ध के लिए नकारा हो जाने थे ज़्योंकि ढाल इस प्रकार पकड़ी जाती थी कि उससे बाईं आंख को दिखाई नहीं देता था और केवल दाईं आंख से ही देखा जा सकता था। यदि दाई आंख निकाल ली जाती तो पुरुष युद्ध में ''अंधे'' हो जाने थे। यदि याबेश आत्मसमर्पण करने से इन्कार करता, तो नाहाश ने नगर पर कज़्जा करके सब कुछ तहस नहस कर देना था।

जब शाऊल ने सुना तो परमेश्वर द्वारा उसे उत्साह मिला और उसने सेना इकट्ठी की। विजय मिल गई और इस्राएल के राजा के रूप में शाऊल की गद्दी पज़्की हो गई।

याबेश की कहानी यहीं खत्म नहीं होती। चालीस साल बाद, शाऊल की शज़्ति, स्थिति तथा घमण्ड के साथ साथ उसकी विजयें भी बढ़ गईं। उसकी पहले वाली विनम्रता खत्म हो गई थी और वह एक सनकी तानाशाह बन गया था। शाऊल का अंत गिलबो पर्वत पर हुआ और उसकी मृत्यु से पलिश्तियों के लिए अपने देवताओं में आनन्द करने का अवसर मिला गया (31:6-10)। याबेश ने शाऊल तथा उसके पुत्रों की लाशें अपमानित होने के लिए देने से इन्कार कर दिया। उन्होंने निडरता से बेतशान में जाकर उनकी लाशों को जलाकर गाड़ दिया (31:11-13)। अद्‌भुत कृतज्ञता का यह प्रदर्शन इस नगर को विशेष बनाता है!

कृतज्ञता का व्यवहार

याबेश-गिलाद के इन शूरवीर लोगों से हम देखते हैं कि कृतज्ञता में नीचे दिए गए गुण मिलते हैं।

कृतज्ञता या धन्यवाद देना याद रखने से होता है (11:11)। चालीस साल गुज़र चुके थे जब शाऊल ने याबेश की सहायता की थी, परन्तु उसके कार्य को भुलाया नहीं गया था। बहुत से लोग आज दयालुता के कामों को इतनी जल्दी भूल जाते हैं परन्तु छोटी सी गलती को नहीं! जब हमारे भले के लिए अच्छे काम होते हैं, तो उसके बदले हमें ''धन्यवाद'' का छोटा सा शज़्द कहने से हिचकिचाना नहीं चाहिए। जब अच्छे भाई हमारी सहायता करते हैं

तो हमें धन्यवाद करना चाहिए:

> जिस परमेश्वर की सेवा मैं अपने बापदादों की रीति पर शुद्ध विवेक से करता हूं, उसका धन्यवाद हो कि अपनी प्रार्थनाओं में तुझे लगातार स्मरण करता हूं। ... और मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, जो पहिले तेरी नानी लोईस, और तेरी माता यूनीके में थी, और मुझे निश्चय हुआ है, कि तुझ में भी है (2 तीमुथियुस 1:3-5)।

> जो तुम्हारे अगुवे थे, और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो; और ध्यान से उसके चाल-चलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो (इब्रानियों 13:7)।

परमेश्वर की ओर से अद्भुत दान पाकर हमें धन्यवाद देना चाहिए:

> परन्तु यहोवा की करुणा उसके डरवैयों पर युग-युग और उसका धर्म उनके नाती पोतो पर भी प्रकट होता रहता है, अर्थात उन पर जो उसकी वाचा का पालन करते और उसके उपदेशों को स्मरण करके उन पर चलते हैं (भजन संहिता 103:17, 18)।

> उसके किए हुए आश्चर्यकर्म स्मरण करो, उसके चमत्कार और निर्णय स्मरण करो (भजन संहिता 105:5)।

कृतज्ञता के लिए आपके अपने प्रयास आवश्यक हैं (31:12)। याबेश के लोग अपनी जान जोखिम में डालकर शाऊल की लाश लाने को तैयार थे। वे आत्मबलिदान कर रहे थे। कृतज्ञता न दिखाने का पहला कारण यह है कि विश्वासी भाई कृतज्ञता दिखाने का प्रयास नहीं करते! जबकि कृतज्ञता या धन्यवाद दिखाई देना चाहिए!

कृतज्ञता निरन्तर होनी चाहिए, शर्त सहित कभी नहीं (31:12)। लोगों में शाऊल का नाम खराब हो गया था; अपने जीवन के अंत में उसे पागल के रूप में जाना गया था। उसके दरबार में सनकी तानाशाही चलती थी। राजा के रूप में उसका पहले वाला सम्मान नहीं रहा था। शाऊल मर गया था, त्याग दिया गया था, अन्यजातियों के मज़ाक के लिए छोड़ा गया था, परन्तु फिर भी नगर के लोगों ने उसके प्रति कृतज्ञता दिखाई! कृतज्ञता या धन्यवाद देना कभी भी व्यक्ति की पदवी की शर्त पर नहीं होना चाहिए। चाहे कितनी भी कमियां ज़्यों न हों सराहना होनी आवश्यक है। केवल इसलिए कि कोई दूसरे को ''पसन्द'' नहीं करता धन्यवाद न करने की बात कितनी बुरी है।

धन्यवाद मन से होना चाहिए (31:12ख, 13)। याबेश ने पूरा ज़ोर लगा दिया। हमें चाहिए कि धन्यवाद व्यक्त करने के लिए पूरा ज़ोर लगा दें। ''थोड़ा सा'' प्रयास करना ही काफी नहीं होगा।

कृतज्ञता से लगाव का पता चलता है (31:13)। इन निवासियों ने शाऊल की मृत्यु पर शोक प्रकट किया। वे उसे पसन्द करते थे और उनका यह गहरा लगाव साफ दिखाई देता है। कृतज्ञता लगाव तथा भावनात्मक बंधन को प्रकट करता है (तु. फिलिप्पियों 4:18)। मसीही लोगों से उस प्रेम के कारण जो उनके हृदयों में है कृतज्ञता दिखाने की अपेक्षा की जाती है (1 यूहन्ना 4:19-21)।

कृतज्ञता स्वैच्छिक है (31:12)। कोई विशेष आग्रह नहीं किया गया था और न ही उन्हें किसी प्रकार के प्रतिफल की उम्मीद थी। उन्होंने बिना किसी के उकसाने या आग्रह के यह कार्य किया। कृतज्ञता का यही ''प्रमाण'' है क्योंकि जब किसी को कृतज्ञता दिखाने के लिए उत्साया या विवश किया जाता है इसका स्वाद ही खराब हो जाता है। विवश होकर दिखाई गई कृतज्ञता की प्रेरणा प्रेम नहीं है और न ही परमेश्वर को पसन्द है!

उनकी कृतज्ञता केवल प्रेम के कारण थी और इसे सेवा करके दिखाया गया।

एक महत्वपूर्ण सबक की ओर ध्यान दिलाया गया

इस ऐतिहासिक विवरण से हमें कृतज्ञता का एक महत्वपूर्ण पहलू दिखाया गया है और वह यह है कि यदि धन्यवाद देना या कृतज्ञता शांत और अव्यक्त रहती है तो इसका कोई लाभ नहीं!

1860 में, मिशिगन झील पर एक तूफ़ानी रात में एक तेज आवाज वाले स्कूनर जहाज़ ने एक स्टीमबोट को टक्कर मार दी। विनेटका, इलिनोयस के लगभग 1 मील दूर तट पर स्टीमबोट के 393 स्वारियों में से 279 लो डूब गए। उस त्रासदी का एक नायक नॉर्थवैस्टर्न यूनिवर्सिटी का छात्र एडवर्ड स्पेंसर था। यह जानकर कि क्या हुआ है सपेंसर ने मिशिगन झील के ठण्डे पानी में छलांग लगा दी और डूबने वाले यात्रियों को निकाल लाया। वह एक यात्री को किनारे पर छोड़ता और तुरन्त दूसरे को लाने के लिए चला जाता। अकेले एडवर्ड सपेंसर ने उस रात सत्रह लोगों को बचाया। उस अनुभव के तनाव से उसे धक्का लगा और बाकी जीवन वह व्हीलचेयर पर ही रहा। उसके 80वें जन्म दिन पर किसी ने उसे उस दिन की सबसे भयानक याद करने को कहा। उसने उज़र दिया, ''उन सत्रह लोगों में से एक भी कभी मेरा धन्यवाद करने के लिए नहीं लौटा।''

आइए हम सब दूसरों के प्रति धन्यवाद प्रकट करने की अपनी सामान्य गलती को स्वीकार करें। हम अपने आप को कृतज्ञ मान सकते हैं या आभार व्यक्त करने की इच्छा रख सकते हैं, परन्तु चुप रहकर कृतज्ञ महसूस करना धन्यवाद करने के बराबर कभी नहीं हो सकता!

आइए हम उस भलाई को याद रखने और उन लोगों के धन्यवादी होने का निश्चय कर लें जिनके कारण हमारे जीवन में भलाई आई है। सबसे पहले परमेश्वर को धन्यवाद देना याद रखें:

मैं परमेश्वर के नाम का भजन गाऊंगा, क्योंकि उसने मेरी भलाई की है (भजन

संहिता 13:6)।

> यहोवा मेरा बल और मेरी ढाल है; उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहायता मिलती है; इसलिए मेरा हृदय प्रफुलित है; और मैं गीत गा गा कर उसका धन्यवाद करूंगा (भजन संहिता 28:7)।

आइए अपने परिवार के लोगों (अर्थात माता-पिता, बच्चों, दादा-दादी, नाना-नानी); परमेश्वर के परिवार के लोगों अर्थात कलीसिया; और अपने समाज के लोगों का जो हमारा भला करते हैं धन्यवाद करें।

सारांश

धन्यवाद करना नैतिक जिम्मेदारी है जो पूरी की जानी आवश्यक है। धन्यवाद न कर पाना पाप है। जब आपके अन्दर याबेश की कृतज्ञता आ जाए, तो आप आनन्द से भरे अद्‌भुत व्यक्ति बन जाएंगे; आपका सारा जीवन आनन्दित हो जाएगा; आपके और मित्र बन जाएंगे; आप यह ध्यान देने लगेंगे कि दूसरे लोग आपके लिए कितना कुछ करते हैं और आप सच्ची खुशी की खोज में अपने आपको सेवा के लिए समर्पित कर देंगे!

इतने लोगों से इतना कुछ पा लेने के बाद उनकी भलाई को न मानना कितना बुरा है! कृपया धन्यवाद करना न भूलें। इसी सप्ताह धन्यवाद करें! (1 थिस्सलुनीकियों 5:18)।